प्रस्तावना

मैं इस पुस्तक को लेकर वास्तव में उत्साहित हूं और आशा करती हूं कि इसे पढ़ने वाले आप सभी लोग मेरे तरह ही उत्साहित होंगे।

यह प्रकाशन हमारे देश के वास्तविक परिवर्तनकर्ताओं की असली कहानी को सामने रखता है। ये उन स्कूलों की कहानी बताता है जो अपने पर्यावरण को बेहतर बनाने के लिए अलग तरह से काम कर रहे हैं; वे स्कूल जो अपने दावों को साबित भी रहे हैं। इस बात पर कोई संदेह नहीं है कि आज हमारे पर्यावरण पर गंभीर संकट छाया हुआ है। एक देश के रूप में हमें अधिक ऊर्जा, अधिक पानी और अधिक संसाधनों की आवश्यकता है। इसके बावजूद यदि हम इस स्थिति का अच्छी तरह से प्रबंधन नहीं करते हैं तो इससे हमारे प्राकृतिक पर्यावरण का क्षरण होगा, जिसके परिणामस्वरूप प्रदूषण और विषाक्तता में वृद्धि के साथ ही गरीबी भी बढ़ेगी। इन सबका भारत के विकास और यहां के लोगों के स्वास्थ्य पर बड़ा प्रभाव पड़ेगा।

लेकिन पर्यावरण के बारे में सीखना पर्याप्त नहीं है। हमें पर्यावरण के अनुकूल तरीकों को इस्तेमाल करने और खुद में बदलाव लाने की जरूरत है। आज हम जिस दुनिया में रह रहे हैं उसमें यही जरूरी है। और हमने कई वर्षों से ग्रीन स्कूल प्रोग्राम के एक हिस्से के रूप में यही करने का प्रयास किया है। हम ने स्कूलों के साथ काम करके उन्हें समझाने की कोशिश की है कि बदलाव लाने वाले होने का क्या मतलब है, वादों पर अमल करने का क्या मतलब है, 'ग्रीन' स्कूल होने का क्या मतलब है। इस पुस्तक में जिन स्कूलों का उदाहरण आपके सामने प्रस्तुत किया गया है, उन्होंने ऐसा किया हैं।

उन्होंने बदलाव लाने के लिए ज़मीनी स्तर पर काम किया है। आज, वे अपने पानी का प्रबंधन अलग ढंग से करते हैं। उन्होंने अपने परिसरों में वर्षाजल को जमा करके पानी की उपलब्धता बढाई और अपनी पानी की मांग को कम किया है। हम जानते हैं कि जलवायु परिवर्तन के साथ पानी की मांग और भी बढ़ेगी और इसका सावधानीपूर्वक प्रबंधन करना महत्वपूर्ण हो जाएगा। जलवायु परिवर्तन से अनियमित वर्षा में बढ़ोतरी होगी और कम वर्षा वाले दिनों में अधिक वर्षा होगी। इसलिए, बारिश को रोके रखने की हमारी क्षमता, उसकी हर एक बूंद को महत्व देने की क्षमता, आने वाले वर्षों में हमारे अस्तित्व के लिए आवश्यक होगी। ये स्कूल हमें बताते हैं कि इसे कैसे संभव बनाया जा सकता है।

फिर ऐसे स्कूल भी हैं जिन्होंने अपने कचरे का बेहतर प्रबंधन किया है। हम जानते हैं कि आज हमारी नदियां प्लास्टिक से भरी हुई हैं। हम जानते हैं कि आज हमारे शहर विशाल कूड़े के ढेर बन गए हैं जो अस्वास्थ्यकर और पर्यावरण की दृष्टि से असंवहनीय हैं। लेकिन आगे क्या रास्ता है? आगे बढ़ने का एकमात्र तरीका यह है कि हम गैर-बायोडीग्रेडेबल और रीसाइकल न हो सकने योग्य सामग्री का उपयोग कम से

Paving the path book hindi.indd 4 09/10/23 11:31 AM

कम करें। साथ ही, हम यह सुनिश्चित करें कि हम अपने कचरे को अलग अलग कर के जो रीसाइकल हो सकती हैं, उन चीजों को रीसाइकल करें। इस स्कूलों ने इस बात को संभव कर के दिखाया है।

फिर अन्य मुद्दे भी हैं, जैसे हमारे यात्रा करने के तरीके, जो वायु प्रदूषण का कारण बनते है; या हम कितनी ऊर्जा का उपयोग करते हैं; या हमारी ऊर्जा का स्रोत; या फिर ये कि हम अपनी विभिन्न आवश्यकताओं के लिए कितनी भूमि का उपयोग करते हैं। ये ऐसी चुनौतियां हैं जो बड़े पर्यावरणीय प्रश्नों को जन्म देती हैं। स्थानीय स्तर पर सभी उपलब्ध संसाधनों के साथ छात्रों को शामिल कर उनसे निपटना ही ग्रीन स्कूल का मकसद है।

ये मॉडल स्कूल हैं, इसलिए बदलाव की ये कहानियां हमें प्रेरित करेंगी। लेकिन इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि हम उनके उदाहरणों से सीखें और जो वो कर रहे हैं, उसे अपने घरों और स्कूलों में दोहराएं, बल्कि उससे भी अधिक करें। यही कारण है कि मैं इस पुस्तक को लेकर विशेष रूप से उत्साहित हूं। इसमें पर्यावरण पर पाठ शामिल हैं, जिन्हें हर स्कूल, हर कक्षा, और हर छात्र को पढ़ाने की जरूरत है। मुझे आशा और पूर्ण विश्वास है कि हम ऐसा कर पाएंगे।

अंत में, किसी भी पहल के सफल होने के लिए सबसे महत्वपूर्ण है उस कार्य को मापने का तरीका। क्योंकि जब आप माप सकते हैं, तभी आप निगरानी कर सकते हैं या सिखा सकते हैं, और इसी तरह परिवर्तन की एक छोटी सी बूंद परिवर्तन का सागर मंथन बन जाती है।

यही कारण है कि ये स्कूल अलग हैं; न केवल वे परिवर्तन कर रहे हैं बल्कि वे इस परिवर्तन को माप भी रहे हैं। वे इसका आंकलन कर रहे हैं ताकि वे, और साथ ही साथ हम भी, जान सकें कि वे कहां खड़े हैं और आगे क्या कर सकते हैं।

यहां प्रदर्शित सभी स्कूलों का मैं इस कार्य में भाग लेने के लिए तहे-दिल से धन्यवाद करती हूँ। और उन अनेक लोगों का भी धन्यवाद जिनकी कहानी अभी लिखी जानी बाकी है। हम जानते हैं कि आपका काम मायने रखेगा। यह ग्रीन इंडिया की अवधारणा और तौर-तरीकों को सबके सामने लेकर आएगा। मैं हमारी इस यात्रा के शुरू होने की प्रतीक्षा कर रही हूँ और आशा करती हूं कि आने वाले वर्षों में कई और स्कूल हमारे साथ जुड़ेंगे।

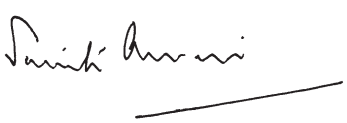

सुनीता नारायण
महानिदेशक,
सीएसई

Paving the path book hindi.indd 5 09/10/23 11:31 AM